प्रो. शरत महन्त स्मृति व्यख्यानमाला 2024 के उद्घाटन पर

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक : 01 मई 2024, बुधवार	समय : 4.00 PM	स्थान : रॉयल ग्लोबल विश्वविद्यालय

-
-
-
-
- प्रसिद्ध इतिहासकार और अर्थशास्त्री तथा केंद्र सरकार की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य श्री संजीव सान्याल जी,
- मंच पर विराजमान विद्वत् जनों,
- मीडिया के मेरे मित्रों,
- देवियों और सज्जनों,

आप सभी को मेरा नमस्कार और हार्दिक अभिनन्दन।

आज 9वें प्रोफेसर शरत महंत समृति व्यख्यानमाला के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में आप सभी के बीच उपस्थित होकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह एक ऐसा मंच है, जो भारत के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक विषयों पर नवीन चिंतन को बढ़ावा देता है। इस कार्यक्रम का हिस्सा बनना मेरे लिए सौभाग्य और गर्व की बात है। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं प्रो. शरत महन्त फाउंडेशन को धन्यवाद देता हूं।

प्रोफेसर शरत महन्त जी केवल एक शिक्षाविद् ही नहीं, बल्कि वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक चिंतक, इतिहासकार एवं समाजसेवक के साथ-साथ मानवाधिकार के प्रबल समर्थक थे। उनका जीवन ज्ञान की खोज और समाज की बेहतरी के लिए समर्पित था।

मैं आज, उनके जन्म दिवस पर, उन्हें शत्-शत् नमन और वंदन करता हूँ।

मुझे बताया गया है कि प्रोफेसर शरत महन्त जी का जन्म सन् 1937 में शिवसागर जिले के नाजिरा के प्रसिद्ध "श्रीश्री चलिहा बारेघर सत्र" के एक संस्कारी परिवार में हुआ था।

वे एक सफल शिक्षक थे। शिवसागर कालेज के इतिहास विभाग में उन्होंने लगभग 33 वर्षों तक अध्यापन किया।

वे एक अच्छे शिक्षक के साथ ही एक अच्छे पत्रकार भी थे। उन्होंने लगभग बीस वर्षों तक पत्रकारिता की।

उनकी असमिया और अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर मजबूत पकड़ थी। वे अपने समय के एक प्रसिद्ध लेखक थे। उनकी रचनाएँ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता के साथ प्रकाशित होती थीं।

महन्त जी ने असम के संक्षिप्त इतिहास सहित बच्चों के लिए कई पुस्तकें भी लिखीं, जिनसे असमिया साहित्य भंडार की श्रीवृद्धि हुई है।

मित्रो,

एक शिक्षक के रूप में महंत जी ने हमेशा शिक्षा की सामाजिक प्रासंगिकता पर जोर दिया। उनका कहना था कि सामाजिक प्रासंगिकता के बिना शिक्षा निरर्थक है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और बेहतरी का साधन है, न कि किसी व्यक्ति की उपलब्धि की सजावटी मुहर। सामाजिक परिवर्तन और बेहतरी पर जोर देने वाली शिक्षा ही हमारी युवा पीढ़ी को वैश्विक चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए तैयार करेगी।

मुझे खुशी है कि ऐसी दार्शनिक सोच रखने वाले प्रो. शरत महन्त जी के जन्मदिन के अवसर पर व्याख्यानमाला श्रृंखला के माध्यम से उनकी विरासत को सम्मानित करना जारी है। उनकी स्मृति में व्याख्यानमाला का आयोजन करना अत्यंत ही सराहनीय है। यह उनके जीवन, कार्यों और सामाजिक योगदान को याद करना प्रसंशनीय प्रयास है।

मुझे बताया गया है कि आज के इस व्याख्यानमाला का विषय “भारतवर्ष : हमारी सभ्यतागत पहचान की उत्पत्ति” है।

“भारतवर्ष” शब्द हमारे प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप का वर्णन करता है। भारतवर्ष एक समृद्ध इतिहास, संस्कृति और धार्मिक महत्व के साथ प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप का प्रतिनिधित्व करता है।

प्राचीन समय में, भारतवर्ष एक विशाल क्षेत्र था, जिसमें वर्तमान भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल, भूटान और अफगानिस्तान के कुछ हिस्से शामिल थे। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह वेदों की भूमि, प्राचीन हिंदू शास्त्रों और विभिन्न देवी-देवताओं की जन्मस्थली थी। हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित कई महत्वपूर्ण घटनाएं, जैसे रामायण और महाभारत, भारतवर्ष में हुईं हैं।

भारत दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यता है और इसे दुनिया ने हमेशा धन और ज्ञान की भूमि के रूप में देखा है। हमारे देश को दर्शन, गणित, विज्ञान और उच्च कोटि की प्रौद्योगिकी को विकसित करने का श्रेय दिया जाता है। सभ्यता के विकास में इस महान राष्ट्र का योगदान ईसाई युग से भी कई हजार साल पहले का है।

भारत को उसकी समृद्ध अर्थव्यवस्था, व्यापार, वाणिज्य और संस्कृति के लिए सम्मान प्राप्त था। औपनिवेशिक ताकतों के आगमन से पहले भी, हमारे वस्तुओं को उनकी बेहतर गुणवत्ता और शिल्प कौशल के लिए मान्यता दी जाती थी। हमारे पास ऐसे कई ऐतिहासिक प्रमाण हैं, जो ये साबित करते हैं कि भारतवर्ष की प्रगति और समृद्धि का स्तर बहुत ऊंचा था। प्राचीन काल में हमारा भारतवर्ष प्रचुरता और संपन्नता की भूमि रहा है।

.

मैं समझता हूं कि कोई भी राष्ट्र तब तक अपनी घरेलू और विदेशी नीतियां नहीं बना सकता जब तक उसे अपने इतिहास, जड़ों, शक्तियों और विफलताओं के बारे में स्पष्ट ज्ञान न हो। हालाँकि, पिछली कुछ शताब्दियों से हमारा देश राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अस्थिरता का सामना करते हुए अदूरदर्शिता की स्थिति में था, जिसका न केवल इसके सामाजिक-धार्मिक मूल्यों पर बल्कि आर्थिक समृद्धि पर भी प्रभाव पड़ा।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हमारे अतीत की सभ्यतागत चेतना की स्पष्ट दृष्टि थी। बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं ने भारतीय विचारों को ध्यान में रखते हुए स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा दी थी। उनके पास सभ्यतागत चेतना के परिणामस्वरूप भारत के राजनीतिक और आर्थिक संस्थानों के पुनर्निर्माण की दृष्टि थी, जिसने भारत को एक देश, एक लोग और एक राष्ट्र बनाया।

मैं समझता हूं कि हमारी युवा पीढ़ी को हमारे देश के समृद्ध इतिहास, संस्कृति और विरासत का ज्ञान होना चाहिए ताकि वे अपनी संस्कृति के महत्व को समझ सकें और इस पर गर्व कर सकें।

मैं समझता हूं कि इस परिपेक्ष्य में आज के इस व्याख्यामाला का यह विषय प्रासंगिक है। इस विषय पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालने के लिए प्रसिद्ध इतिहासकार और अर्थशास्त्री श्री संजीव सान्याल कार्यक्रम में व्याख्ता के रूप में उपस्थित हैं। मुझे विश्वास है कि आप सभी इसका लाभ मिलेगा और भारतवर्ष और इसकी प्राचीन सभ्यता की उत्तपत्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

प्रो. शरत महन्त भी इतिहास और अर्थशास्त्र के जानकार थे। मुझे बताया गया है कि जब भी किसी शिक्षक या छात्र को जरूरत होती थी, तो वे इतिहास के तथ्यों और आंकड़ों के साथ सभी को उपलब्ध कराने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। वे उस समय के माहौल में अत्यंत जागरूक और सक्रिय रहा करते थे।

शरत महन्त जी के बारे में जानने के बाद, मैं उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से काफी प्रभावित हुआ हूं। उनके लिए समाज सेवा ही सर्वोपरि था। समाज और देश के लिए कुछ कर गुजरने का जज़्बा उनमें कूट कूट कर भरी हुई थी। आज वे विशेष रूप से हमारी युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

तीन दशकों से अधिक समय तक कालेज में एक अच्छे शिक्षक के रूप में शरत महंत के योगदान को आने वाली पीढ़ी लंबे समय तक याद रखेगी - यह मेरा पूरा विश्वास है।

प्रोफेसर महंत जी आदर्शवादी थे। उन्होंने एक आदर्श पुत्र के साथ-साथ आदर्श पति और पिता का भी फर्ज निभाया है। उन्होंने अपने तीनों बच्चों को सुशिक्षित बनाने के साथ-साथ उनमें सुन्दर संस्कार भी दिए हैं।

आज यहां मौजूद उनके बड़े पुत्र पार्थ सारथी महन्त एक सफल आईपीएस अधिकारी हैं, तो द्वितीय पुत्र डॉ. सव्यसाची महन्त एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् और जाने माने साहित्यकार हैं। उनकी सुपुत्री डॉ. उपासना महन्त, जिनकी पहल से फाउंडेशन को नई ऊंचाइयां मिली हैं, वे जिन्दल यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर हैं। उनके सुपुत्र और सुपुत्री को, इस सुअवसर पर बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

मैं इन्हीं शब्दों के साथ, एक बार पुन: आप सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए प्रोफेसर शरत महंत स्मृति व्याख्यानमाला के सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद।

जय हिन्द।